राखी का मूल्य

पात्र

कर्मवती	जवाहरबाई	तातारखाँ	सिपाही
बाघसिंह	हुमायूँ	हिंदूबेग	दूत

पहला दृश्य

(चित्तौड़ के भीतरी भाग में महाराणा साँगा की पत्नियाँ–कर्मवती और जवाहरबाई तथा अन्य क्षत्राणियाँ एवं बाघसिंह बैठे हुए वार्तालाप कर रहे हैं।)

कर्मवती : हाँ, बाघसिंह जी! युद्ध का क्या हाल है?

बाघसिंह : राजपूत वीरता से लड़ रहे हैं, किंतु एक तो हमारी संख्या बहुत कम है, दूसरे शत्रुओं का तोपखाना आग उगल रहा है। उसका मुक़ाबला तलवारों से तो हो नहीं सकता। हमें तो मरना है। लेकिन हम हँसते-हँसते मरेंगे और बहुतों को मारकर ही मरेंगे। पर दुख तो इस बात का है कि मरकर भी मेवाड़ की आन की रक्षा न कर पाएँगे।

कर्मवती : बड़ा कठिन प्रसंग है। इस समय मेरे स्वामी यहाँ नहीं हैं। उनके रहते मेवाड़ की ओर आँख उठाने का किसमें साहस था? उनके शौर्य एवं प्रताप से मेवाड़ के बाहर दूर-दूर तक अत्याचारियों के प्राण काँप उठते थे। मेवाड़ की सीमा में तो पैर रखने का साहस ही किसे हो सकता था! बाघसिंह जी, हमने आपसी वैमनस्य की आग में अपने ही हाथों अपना स्वाहा कर दिया।

बाघसिंह : देवी! अब पश्चाताप करने से क्या होगा? अब तो आप हमें मार्ग बताइए।

कर्मवती : मुझे एक उपाय सूझा है।

बाघसिंह : क्या?

कर्मवती : मैं हुमायूँ को राखी भेजूँगी।

जवाहरबाई : हुमायूँ को! एक मुसलमान को भाई बनाओगी?

कर्मवती : चौंकती क्यों हो, जवाहरबाई? मुसलमान भी इनसान हैं। उनके भी तो बहनें होती हैं। सोचो तो बहन, क्या वे मनुष्य नहीं हैं? क्या उनके हृदय नहीं हैं? वे ईश्वर को खुदा कहते हैं, मंदिर में न जाकर मसजिद में जाते हैं, क्या इसीलिए हमें उनसे घृणा करनी चाहिए?

बाघसिंह : किंतु और भी तो बाधाएँ हैं। क्या हुमायूँ पुराना बैर भूल सकेगा? सीकरी के युद्धों के ज़ख़्मों के निशान क्या आसानी से मिट सकेंगे?

कर्मवती : हमारी राखी वह शीतल औषधि है जो सारे घाव भर देती है और वह वरदान है जो सारे बैर-भावों को समाप्त कर देती है। राखी पाने के बाद भी क्या कोई बैर याद रख सकता है?

जवाहरबाई : परंतु वे हमारे देश भारत के शत्रु हैं।

कर्मवती : ऐसा न कहो! उन्हें भी तो अब भारत में जीना-मरना है। हमारी मातृभूमि उनकी भी जन्मभूमि बन चुकी है। अब उन्हें क़ाफ़िले में लादकर अरब नहीं भेजा जा सकता है। उन्हें रहना पड़ेगा और हमें उन्हें रखना पड़ेगा। वे हमें बहन समझें और हम उन्हें भाई। यही स्वाभाविक है, यही उचित है। इस कठिन समय में मेवाड़ की रक्षा का अन्य कोई दूसरा उपाय संभव नहीं है? बाघसिंह जी, आप ही कुछ बताइए, आपकी क्या राय है?

बाघसिंह : हम तो आज्ञा का पालन करना जानते हैं, राय देना नहीं।

कर्मवती : अच्छा, तो फिर वही हो। भ्रातृत्व और मनुष्यत्व पर विश्वास करके हुमायूँ की परीक्षा ली जाए। लीजिए यह राखी और पत्र, आज ही इन्हें दूत के हाथ बादशाह हुमायूँ के पास भेजिए।

(राखी और पत्र देती है।)

जवाहरबाई : अच्छी बात है। हम भी देखेंगे कि कौन कितने पानी में है। इस बहाने से एक मुसलमान की परीक्षा हो जाएगी और यह भी प्रकट हो जाएगा कि एक राजपूतानी की राखी में कितनी ताक़त है!

दूसरा दृश्य

(बिहार के गंगातट पर हुमायूँ का फ़ौजी डेरा। अपने खास तंबू में हुमायूँ और उसके सेनापति हिंदूबेग और तातारखाँ बैठे हैं। एक पहरेदार का प्रवेश।)

पहरेदार : *(दोनों हाथ जोड़कर)* जहाँपनाह!

हुमायूँ : क्या बात है?

पहरेदार : आपकी सेवा में मेवाड़ का एक दूत आया है।

हुमायूँ : मेवाड़ से? अच्छा, यहीं भेज दो।

(पहरेदार चला जाता है।)

हुमायूँ : मेवाड़ का दूत! मेवाड़ लफ़्ज में ही कुछ जादू है। बयाना और सीकरी की लड़ाई में मैं भी अब्बाजान के साथ था। राजपूतों से हमारी फ़ौज कैसी भयभीत होती थी। राणा साँगा! उन्हें तो खुदा ने फौलाद से बनाया था। उनकी तिरछी नज़र क़यामत का पैगाम थी। मेवाड़ पर आजकल बहादुरशाह ने चढ़ाई कर रखी है न?

(*दूत का प्रवेश*)

हुमायूँ : आओ मेवाड़ के बहादुर।

दूत : (*दोनों हाथ जोड़कर*) स्वर्गीय महाराणा साँगा की महारानी कर्मवती ने आपको यह भेंट भेजी है।

हुमायूँ : (*हाथ बढ़ाकर*) मेरी क़िस्मत! हिंदूबेग! तुम जानते हो कि मैं मेवाड़ की बहुत इज़्ज़त करता हूँ, जो एक बहादुर को करनी चाहिए। वहाँ की ख़ाक भी सिर पर लगाने की चीज़ है। वहाँ के ज़र्रे-ज़र्रे में जन्नत बसती है।

तातारखाँ : दुश्मन की तारीफ़ करने में जहाँपनाह से बढ़कर···

हुमायूँ : दुश्मन! ह: ह: ह:! दुश्मन! आँखों पर से तअस्सुब का चश्मा हटाकर देखो। जिन्हें हम दुश्मन समझते हैं, वे सब हमारे भाई हैं, हम एक ही खुदा की औलाद हैं, तातार! हाँ, देखूँ तो इसमें क्या लिखा है?

(*हुमायूँ पत्र पढ़ते-पढ़ते मग्न हो जाता है।*)

हिंदूबेग : क्या सपना देखने लगे, जहाँपनाह! महारानी कर्मवती ने क्या जादू का पिटारा भेजा है?

हुमायूँ : हिंदूबेग, उन्होंने सचमुच ही जादू का पिटारा भेजा है। मेरे सूने आसमान में उन्होंने मुहब्बत का चाँद चमकाया है। उन्होंने मुझे राखी भेजी है। मुझे अपना भाई बनाया है। (*दूत से*) बहन कर्मवती से कहना, हुमायूँ तुम्हारी माँ के पेट से पैदा नहीं हुआ तो क्या, वह तुम्हारे सगे भाई से भी बढ़कर है। मेवाड़ की इज़्ज़त मेरी भी इज़्ज़त है, जाओ।

(*दूत चला जाता है।*)

तातारखाँ : आपके अब्बाजान के जानी दुश्मन की औरत ने···

हिंदूबेग : उसी औरत ने जिसके पति ने कसम खाई थी कि मुगलों को हिंदुस्तान से बाहर किए बिना चित्तौड़ में कदम न रखूँगा।

हुमायूँ : मुझे अफ़सोस है कि तुम इस राखी की क़ीमत नहीं जानते हो। छोटे-छोटे दो धागे भी जानी दुश्मन को मुहब्बत की जंजीरों में जकड़ देते हैं। यह मेरी खुशक़िस्मती है कि मेवाड़ की बहादुर रानी ने मुझे अपना भाई बनाया है और बहादुरशाह से मेवाड़ की हिफ़ाजत करने के लिए मेरी मदद माँगी है।

तातारखाँ : तो क्या जहाँपनाह ने उनकी बात मान ली है?

हुमायूँ : यह मेरे लिए हुक्म है। राखी आ जाने के बाद भी क्या कुछ सोचा जा सकता है! यह तो आग में कूद पड़ने का बुलावा है। हिंदुस्तान की कहानी कह रही है कि प्रेम के धागों ने हज़ारों कुर्बानियाँ कराई हैं। मैं भी दुनिया को बता देना चाहता हूँ कि हिंदुओं के रस्मो-रिवाज़ मुसलमानों के लिए भी उतने ही प्यारे हैं और उतने ही पाक हैं, जितने उनके लिए।

तातारखाँ : एक मुसलमान के ऊपर एक हिंदू को तरजीह···

हुमायूँ : कौन हिंदू और कौन मुसलमान! यह मैं खूब समझता हूँ। तातारखाँ, मैं जो कुछ कह रहा हूँ, खुदा की हिदायत के मुताबिक ही कह रहा हूँ।

तातारखाँ : हिंदुओं को मुसलमानों के खिलाफ़ मदद दे रहे हैं। क्या यही खुदा की हिदायत है।

हुमायूँ : तुम भूलते हो। हम सब एक ही अल्लाह की औलाद हैं। हिंदुओं के अवतारों ने और हमारे पैगंबरों ने इबादत के लिए एक ही रास्ता बतलाया है। कुरान-शरीफ में साफ़ लिखा है–''हमने हर गिरोह के लिए इबादत का एक खास रास्ता मुकर्रर कर दिया है, जिस पर वह अमल करता है। इसलिए उस पर झगड़ा न करो।'' तुम्हें साफ़ बताया गया है कि नेकी यह नहीं है कि तुमने इबादत के वक़्त मुँह पूरब की तरफ़ किया या पश्चिम की तरफ़ या इसी तरह की कोई रस्मो-रिवाज़ कर ली। नेकी की राह तो उसकी राह है, जो खुदा पर, क़यामत के दिन पर, सारी खुदादाद किताबों पर और सारे पैगंबरों पर ईमान लाता है। अपना धन रिश्तेदारों, ग़रीबों, हज़ करनेवालों, माँगने वालों की राह में और गुलामों को आज़ाद कराने में खर्च करता है। जो बात का पक्का है, जो डर और घबराहट, तंगी और मुसीबत के वक़्त हौसला रखता है, ऐसे ही लोग हैं जो बुराइयों से बचने वाले हैं। यही बात हिंदुओं की मज़हबी किताबें कहती हैं। फिर मज़हब दोनों की मित्रता के बीच में दीवार कैसे बन सकता है?

तातारखाँ : वे हमारे पैगंबर को नहीं मानते हैं।

हुमायूँ : और तुम उनके पैगंबर को मानते हो? तुम्हारे कुरान-शरीफ में तो तुम्हें हुक्म दिया गया है कि तुम दूसरों के पैगंबरों पर भी ईमान लाओ, उनका यक़ीन करो। सच्चाई

जहाँ भी रोशन हुई है, जिस किसी के मुँह से रोशन हुई है, सच्चाई है। खुदा की साफ़ हिदायत है, तो भी तुम हिंदुओं के मज़हब और उनके अवतारों की इज़्ज़त न करते हुए उनसे लड़ते हो। राजपूत इस वक़्त सच्चाई के रास्ते पर हैं और बहादुरशाह गलत रास्ते पर है। सच्चे मुसलमान का काम सच्चाई का साथ देना है, फिर चाहे उसे मुसलमान के ही खिलाफ़ क्यों न लड़ना पड़े। बस, हमें आज ही मेवाड़ की तरफ़ कूच करना होगा।

हिंदूबेग : मुझे हिंदू-मुसलमान का ख़याल नहीं है। पर मैं समझता हूँ कि शेरखाँ को खुला छोड़कर मेवाड़ की तरफ़ लौट जाना खतरे से खाली नहीं है।

हुमायूँ : अब सोचने का वक़्त नहीं है। बहन का रिश्ता दुनिया के सारे सुखों, दौलतों, ताक़तों और सल्तनतों से बढ़कर है। मैं इस रिश्ते की इज़्ज़त रखूँगा। सल्तनत चाहे चली जाए, पर मैं दुनिया को यह कहते हुए नहीं सुनना चाहता कि मुसलमान बहन की इज़्ज़त करना नहीं जानते हैं। तख़्त से उतरकर इससे आगे किसी बहन के दिल में जगह पा सकूँ, तो अपने आपको दुनिया का सबसे बड़ा खुशक़िस्मत इनसान समझूँगा। बहन कर्मवती! तुम्हारी राखी मुझे वही ताक़त दे, जो वह राजपूतों को देती आई है। तातारखाँ और हिंदूबेग तुम फौरन पेशतर फ़ौज तैयार करो।

(हुमायूँ राखी हाथ में बाँधते हैं। सब चले जाते हैं और पर्दा गिर जाता है।)

–हरिकृष्ण प्रेमी